Lecture Series No:- 69

Topic,

Online Class.
Date- 2/12/2022
Day-
Time- 10:40 10:50 A.M.

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A part-I
Paper-(5.)
A.N.D College Shahpur
patory Samastipur.

(1) World.

Ans:-> रामानुज के दर्शन में जगत् को सत्य माना गया है। रामानुज परिणामवाद जो सत्कार्यवाद का एक रूप है, में विश्वास करते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार कारण का पूर्णतः रूपांतर कार्य के रूप में होता है। जगत् ईश्वर की शक्ति प्रकृति का परिणाम है। (परिणामवाद) ईश्वर जो विश्व का कारण है, स्वयं कार्य के रूप में परिणत हो जाता है।

P.T.O.

जिस प्रकार कारण सत्य है उसी प्रकार कार्य भी सत्य है।

जिस प्रकार ईश्वर सत्य है उसी प्रकार जगत् भी सत्य है। रामानुज का यह विचार शंकर के विचार का विरोधी है। शंकर विश्व को ब्रह्म का विवर्त मानते हैं। यही कारण है कि शंकर के दर्शन में जगत को मिथ्या, प्रपंच माना गया है।

सृष्टि के पूर्व जगत् प्रकृति के रूप में ब्रह्म के अंदर रहता है। सत्व, रजस और तमस भी प्रकृति के गुण है। जीव भी सृष्टि के पूर्व शरीर से रहित ब्रह्म के अंदर रहते हैं। चित, अचित, और प्रकृति के गुण है। जीव भी सृष्टि के पूर्व शरीर से रहित ब्रह्म के अंदर रहते हैं। चित, अचित और

P.T.O.

प्रकृति के गुण है, जीव भी
सृष्टि के पूर्व शरीर से रहित
ब्रह्म के अंदर रहते है,
ब्रह्म के तीन तत्व है,
इसलिए जगत का सत्य माना जाता है
जगत का ज्ञान प्रत्यक्ष (है,)
और अनुमान के द्वारा होता है,
जगत् की विभिन्न वस्तुओं का
जो ज्ञान होता है, उनका सर्व
खण्डन सम्भव नही है, रज्जु-
सर्प का ज्ञान रज्जु के प्रत्यक्ष
से खंडित हो जाता है, परंतु
घड़ा, कपड़ा आदि के ज्ञानो का
खंडन नही होता है, etc.)

END